Year-5 Volume: II, April-June, 2023 Issue-18 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

12. ग्लोकल होता कुल्लू का दशहरा मेला : एक विश्लेषण

संध्या यादव
प्रवक्ता
राजकीय पॉलिटेक्निक गाज़ियाबाद
sandhyajourno@gmail.com

शोध-सार

प्रसिद्ध भौगोलिक विचारक एलेन चर्चिल सैम्पुल ने कहा है कि मनुष्य अपनी प्रकृति का उत्पाद है। पर्वतीय संस्कृतियों के विषय में यह कथन और अधिक विशिष्टता के साथ परिलक्षित होता है। पर्वतीय राज्य हिमाचल में प्रकृति अपने विविध रूपों के साथ प्रकट होती है। हिमाचल प्रदेश न सिर्फ़ अपनी भौगौलिक अपितु सांस्कृतिक कारणों के कारण भी अन्य राज्यों से भिन्न है। इस प्राकृतिक विविधता ने विशिष्ट सांस्कृतिक परिदृश्यों को जन्म दिया है। यह सांस्कृतिक विशिष्टता संस्कृति के मूर्त एवं अमूर्त दोनों ही तत्वों में दृष्टिगोचर होती है परन्तु जो संस्कृति समांग तत्वों से निर्मित होती है । वह हिमाचल प्रदेश में स्थानीय लोक संस्कृति के रूप में विविधता के विविध स्तरों को धारण करती है । भाषा, भोजन,आवास और वस्त्रों की यह विविधता सहज ही कौतुक जागृत करती है । इस विविधता के बाद भी जिस भावना से सम्पूर्ण हिमाचल अनुप्राणित होता है, वह है उत्सवधर्मिता का भाव । यह उत्सवधर्मिता मेलों के रूप में नवीन जीवन और उत्साह का संचार भी करती है ।इन मेलों का इतिहास मानवीय सभ्यता जितना ही पुरातन है । ये न सिर्फ़ सांस्कृतिक एकीकरण में सहायक रहे हैं अपितु इनका प्रभाव आर्थिक, सामाजिक एवं वैचारिक आयामों तक भी विस्तृत है । भूगोल जिन समाजों को दूर कर देता है, मेले उन्हें निकट लाने का अभूतपूर्व माध्यम रहे हैं । वैश्वीकरण ने जहाँ विश्व भर में स्थानीय संस्कृतियों के स्वरुप में आमूलचूल परिवर्तन किये हैं ,और लोक उत्सव भी इस परिवर्तन से प्रभावित हुए हैं । ऐसे में हिमाचल प्रदेश के जनजीवन में मेलों ने अपने परम्परगत स्वरुप को अभी तक बचाए रखा है। सुदूर क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए ये मेले रोज़मर्रा की वस्तुओं के साथ साथ लोक संवाद का माध्यम भी हैं। प्रस्तुत अध्याय में हिमाचल प्रदेश में लगने वाले मेलों व उनके इतिहास के साथ कुल्लू जिले के दशहरा मेला के विषय में जानने का प्रयत्न किया गया है। इस मेले का कुल्लू जिले की संस्कृति, सामाजिक बुनावट, आर्थिक ढांचा, स्थानीय व राजनीतिक परिदृश्यों की स्थिति पर विमर्श किया गया है।

प्रस्तावना-

भारत की भौगोलिक भिन्नताओं का स्पष्ट प्रभाव यहाँ की सांस्कृतिक व सामाजिक विविधता पर भी परिलक्षित होता है। उत्तर के भाग में प्रचलित संस्कृति, भाषा, पहनावा व सामाजिक बुनावट दक्षिण या पूर्व के राज्यों से सर्वथा भिन्न है।

Year-5 Volume: II, April-June, 2023 Issue-18 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

यह भिन्नता त्योहारों से लेकर भोजन की संस्कृति, पारिवारिक संरचना, सामुदायिक संस्कृति के सम्बन्ध में भी प्रतिबिंबित होती है। भारत की सांस्कृतिक विभिन्नता हिमाचल प्रदेश के सम्बन्ध में विशेष रूप से प्रयोज्य है। यहाँ की जिलेवार संस्कृति इसे अन्य राज्यों भिन्न बनाती है। इसकी सांस्कृतिक भिन्नता, राज्य में देश के साथ विदेशी सैलानियों को भी आकर्षित करती है। भाषा, खान-पान, रहन-सहन के अतरिक्त मेले यहाँ की जीवन शैली का अभिन्न अंग हैं। यथा यदि भाषाई स्तर पर ही देखा जाए तो अकेले लाहौल जिले में लगभग नौ बोलियाँ (लाहौली,गारी, पलारी, त्रिमानी, तोर, रंग्लोई, शिपि व लोहर, तिब्बती) बोली जाती हैं.। किन्नौर जिले में चार (किन्नौरी,सुन्मामी, चितकुल,रक्दाम्मे), चंबा में पांच (चम्ब्याली, भरमौरी, भट्याली, चुराही, पंग्वाली), पंजाब से निकटस्थ काँगड़ा व उससे लगते जिलों में पांच बोलियाँ (कांगडी-कांडी, पालमपुरी,गद्दी, डोगरी और पंजाबी), शिमला व सोलन जिले में सोलह बोलियाँ, इसी प्रकार कुल्लू में कुल चार बोलियाँ प्रचलन में हैं। यथा भोजन की संस्कृति में भी यही भिन्नता दृष्टव्य है। पारंपरिक हिमाचली भोजन जिसे त्योहारों, विवाहों व अन्य उत्सवों के अवसर पर बनाया जाता है, 'धाम' कहा जाता है। हिमाचल के अलग अलग हिस्सों में इसके स्वाद व प्रकार में परिवर्तन आता जाता है और हिमाचल प्रदेश के ऊपरी क्षेत्रों तक पहुँचते पहुँचते यह सर्वथा भिन्न हो जाती है। हमीरपुर,ऊना, बिलासपुर, काँगड़ा व मंडी जिलों में बनने वाला धाम चंबा, सोलन, लाहौल-स्पिति, किन्नौर व शिमला जिलों में बनने वाले धाम से भिन्न होती है। 'धाम' मुख्यतः स्थानीय भाषा में प्रचलित पारंपरिक भोज है जिसे विभिन्न त्योहारों व उत्सवों के अवसर पर दिया जाता है जो राज्य के भिन्न व्यंजनों का परिचय करवाता है। धाम व हिमाचल प्रदेश को अलग अलग देखना कठिन है क्योंकि यह हिमाचली परंपरा का अभिन्न अंग है। हिमाचली धाम सिर्फ़ परंपरा का तमगा न होकर व्यावहारिक वैदिक ज्ञान भी है जो न सिर्फ़ हिमाचल प्रदेश बल्कि विश्वभर में प्रशंसित है। (Monica Tanwar , Beenu Tanwar , Rattan S. Tanwar, Vikas Kumar, Ankit Goyal) उच्च हिमाचली क्षेत्रों की भोजन संस्कृति अन्य क्षेत्रों से अति भिन्न होती है। लाहौल स्पिती व किन्नौर जिले के ऊपरी हिस्सों पर तिब्बती संस्कृति का प्रभाव अधिक देखने को मिलता है। यहाँ के पहनावे व संस्कृति के साथ साथ भोजन संस्कृति भी सर्वथा भिन्न है। हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले के कई मेलों में स्थानीय लोगों को विशेष रूप से हिमाचली परिधान धारण कर सम्मिलित होने के निर्देश होते हैं। हिमाचली टोपी यहाँ के पारंपरिक पहनावे का प्रमुख प्रतीक है। मुख्यतः पुरुषों द्वारा पहनी जानी वाली टोपी किन्नौर जिले में महिलाएं भी पहनती हैं। अलग अलग जिलों व क्षेत्रों के लोग विशेष रंग की हिमाचली टोपी पहनते हैं। जैसे किन्नौरी गहरे लाल रंग की पट्टी वाली टोपी, रामपुर व उसके आस पास के क्षेत्रों के लोग हरे रंग की पट्टी वाली, कुल्लू क्षेत्र के लोग विशेष ज्यामितीय डिजाईन वाली टोपी पहनते हैं। इसी प्रकार लाहौली व अन्य क्षेत्रों की टोपियाँ एक दूसरे से भिन्न होती हैं।

विश्लेषण एवं विवेचन

Year-5 Volume: II, April-June, 2023 Issue-18 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

आदिवासी व उच्च हिमाचली गांवों/क्षेत्रों में लगने वाले मेलों की विशेषता हस्तनिर्मित वस्तुओं, संगीत के साथ साथ स्थानीय परिधानों में सम्मिलित होने आये लोग भी होते हैं। इन मेलों में स्थानीय खानपान के साथ नृत्य व संगीत भी आयोजित किये जाते हैं। उच्चतर हिमाचली क्षेत्रों के मेले आर्थिक संव्यवहार के साथ साथ सांस्कृतिक सम्मिश्रण का भी माध्यम हैं। यथा स्पीति जिले के काज़ा क्षेत्र में आयोजित होने वाला ला-दर्छा मेला भारत व तिब्बत के मध्य वाणिज्यिक संबंधों को सुदृढ़ करने का भी माध्यम है। स्थानीय निवासियों, क्षेत्रीय व्यापारियों के साथ क्षेत्र की समृद्ध संस्कृति का अनुभव प्राप्त करने हेतु देशी-विदेशी सैलानियों के भी आकर्षण का केंद्र है। इन सबके अतरिक्त यहाँ मेले नई फ़सलों की प्रसन्नता के उत्सव का भी प्रतीक हैं। चंबा जिले के मिंजर मेले में गेहूं,जौ, बाजरे व धान की बालियों की मिंजर बनाकर उन्हें पहना जाता है। इस मेले का शुभारम्भ ही सम्बंधित आराध्य को मिंजर अर्पित करने के उपरांत होता है। इसी प्रकार काँगड़ा जिले का त्यौहार सायर अच्छी फसल के लिए मनाया जाता है। मंडी जिले का शिवरात्रि मेला, चंबा का मिंजर मेला, सिरमौर का रेणुका मेला, बुशहर का लावी मेला, बौद्ध समुदाय द्वारा मनाया जाने वाला सिस्सू मेला और कुल्लू का दशहरा हिमाचल प्रदेश में लगने वाले प्रसिद्द मेलों में से हैं। इनमें से कुल्लू जिले के दशहरा मेला को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त है। कुल्लू में लगने वाले इस मेले का कुल्लवी संस्कृति[1] पर विशेष प्रभाव परिलक्षित होता है । यह अंतर पहनावे, लोकसंगीत व त्योहारों में भी परिलक्षित होता है। हिमाचल प्रदेश की संस्कृति पर इन सबके अलावा मेलों का विशेष प्रभाव है। मेले यहाँ के लोकजीवन का हिस्सा हैं. हिमाचल प्रदेश में लगने वाले मेलों की संख्या इकत्तीस से भी अधिक है। जो यहाँ की सामाजिक संस्कृति के साथ साथ आर्थिक, सामुदायिक संस्कृति के साथ स्थानीय राजनीति को भी प्रभावित करते हैं। इनमें से कुछेक मेलों को राष्ट्रीय स्तर के साथ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी ख्याति प्राप्त है। जिनमें से सिरमौर जिले में लगने वाला रेणुका मेला,चंबा जिले का मिंजर मेला, रामपुर-बुशहर जिले में लगने वाला लावी मेला, मंडी जिले का शिवरात्रि मेला व कुल्लू जिले में लगने वाला दशहरा मेला में देश-विदेश से पर्यटक आते हैं। **शूलिनी मेला** सोलन जिले के सर्वाधिक प्रचलित मेलों में से एक है जिसकी अवधि तीन दिनों की होती है। जिले की हिन्दू कुलदेवी शूलिनी के सम्मान में इस मेले का आयोजन किया जाता है।

मंडी जिले के प्रमुख आराध्य शिव व काली हैं। शिव यहाँ कई स्वरूपों में पूज्यनीय हैं. पिछली शताब्दियों पहले **मंडी जिले का शिवरात्रि मेला**, झगड़ों के समाधान, राज्य का विस्तार व बेहतर शासन हेतु नये नियमों के निर्माण की वजह हुआ करता था। अन्य मेलों के समान ही स्थानीय व्यापार के साथ साथ यह मंडी के शाही परिवार के प्रभुत्व-प्रदर्शन का साधन हुआ करता था। इस मेले में अलग-अलग स्थानीय देवता हिस्सा लेते हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् मंडी की शिवरात्रि में समय के साथ कई परिवर्तन आये हैं। शाही परिवार अब भी इस मेले की व्यस्था में प्रमुख भूमिका में रहता है परन्तु अधिकतर धार्मिक अनुष्ठान अब आम जनता हेतु भी खुले हैं। इसके अतरिक्त एक बड़ा परिवर्तन 'मध्यम

[1] शोधकर्ता Richard Axelby ने अपने शोध 'Hermit Village or Zomian Republic? An update on the political socio-economy of a remote Himalayan community' में कुल्लवी संस्कृति शब्द प्रयुक्त किया है.

Year-5 Volume: II, April-June, 2023 Issue-18 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

जलेब' (द्वितीय जुलूस) के रूप में भी आया है। इस मेले में 200 से अधिक देवी-देवता भागीदारी करते हैं, जिनकी सूची जिला प्रशासन के पास पहले से मौजूद होती है।(तरुण गोयल-ब्लॉग,द लूप होल) **सुजानपुर के होली मेले** का आरंभ कटोच राजा द्वारा माना जाता है। तीन दिन चलने वाले इस मेले के अंतिम दिन रंगों से होली खेली जाती है। इस दिन कटोच राजपरिवार के सदस्य आम जनता के साथ इस त्यौहार को मनाते हैं। राजमहल में रंगीन पानी का एक टैंक रखा जाता है जिसे कटोच राजपरिवार के राजा अपनी रानी व अन्य पारिवारिक सदस्यों पर फेंकते हैं। राजपरिवार महल से हाथियों पर बैठकर सड़कों पर निकलता है। सड़कों के किनारे खड़े स्थानीय लोग उनपर रंग फेंककर होली का त्यौहार मनाते हैं। मेले के लिए सुजानपुर के ऐतिहासिक चौगान को खोल दिया जाता है। बिलासपुर के लुहनू मैदान में आयोजित किया जाने वाला **नल्वारी मेला** 23 मार्च से 17 मार्च तक प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है। इसका प्रारंभ ब्रिटिश राज्य में शिमला के तत्कालीन निरीक्षक डब्ल्यू गोल्डस्टीन द्वारा सन 1889 में किया गया। इसे राज्य में अच्छी प्रजाति के पशुओं के प्रजनन व उनमें बढ़ोत्तरी हेतु शुरू किया गया था। यहाँ आयोजित कुश्ती प्रतियोगिता मुख्य आकर्षण होती है। हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला से 130 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित रामपुर शहर में **लावी अंतर्राष्ट्रीय मेला** नवम्बर महीने में आयोजित किया जाता है । इसे वृहद् हिमालय क्षेत्र में लगने वाला अतिप्राचीन मेला माना जाता है। 300 वर्षों से लगता आ रहा यह मेला कभी सिल्क रूट (अफगानिस्तान-लद्दाख-तिब्बत-किन्नौर) का महत्वपूर्ण केंद्र हुआ करता था। इस मेले के इतिहास का सम्बन्ध तिब्बत व बुशहर स्टेट के राजा केहरी सिंह के शासन काल (सन 1636 -1696) मध्य हुए अनुबंध से जुडा हुआ है। लावी मेला उसी अनुबंध के प्रतीक के रूप में आयोजित होता है। सूखे मेवे, हस्तनिर्मित वस्त्र, कश्मीरी पश्मीना, गुंथ प्रजाति के घोड़ों व किन्नौरी वस्तुओं का करोड़ों का व्यापार इस चार दिवसीय मेले में होता है। हर वर्ष नवम्बर महीने में आयोजित **रेणुका मेला** मेला ऋषि परशुराम की माता रेणुका के सम्मान में लगता है. दीवाली के ग्यारह दिन बाद यह मेला प्रारंभ होता है जो अगले तीन दिनों तक चलता है. स्थानीय लोगों के साथ देवी देवता भी इस मेले में प्रतिभाग करते हैं। **चेस्सू मेला** रेवाल्सर झील के किनारे लगता है. यह मुख्यतः बौद्ध अनुयायियों का मेला है. तिब्बती समुदाय इसे गुरु पद्मसंभव को श्रद्धांजलि स्वरुप मनाता है. देश-दुनिया से हजारो की संख्या में लामा रेवाल्सर झील के किनारे एकत्रित होते हैं. गुरु पद्मसंभव ने प्राचीन नगरी उद्याना (वर्तमान में उड़ीसा) से आकर इस झील के किनारे लम्बे समय तक तपस्या की थी। **भरमौर यात्रा मेला** मुख्यतः गद्दी समुदाय द्वारा मनाया जाने वाला त्यौहार व मेला है. यह गद्दी समुदाय के भरमौर में पड़ाव की अवधि में आयोजित होता है जो जन्माष्टमी के अगले दिन से प्रारंभ होकर छः दिनों तक चलता है. यह मेला गद्दी समुदाय के आराध्य हरिहर(शिव), नरसिंहजी, गणेश, लक्षणा और शीतला को समर्पित होता है. लोग चौरासी मंदिर के प्रांगण में एकत्र होते हैं तथा सम्पूर्ण अनुष्ठानों को समुदाय के मुख्य पुजारी द्वारा संपन्न कराया जाता है। भरमौर यात्रा के एक हफ्ते पश्चात् मणिमहेश क्षेत्र के आस पास अत्यधिक जनरंजक **मणिमहेश मेला** लगता है. यह गद्दी समुदाय के लिए अत्यंत पवित्र तीर्थस्थान है. ऐसी जनश्रुति है कि भगवान् शिव यहाँ निवास करते हैं. मणिमहेश में डल व काली झील में पवित्र स्नान होता है। भरमौर व मणिमहेश मेलों की ही भांति **सुई मेला** मेला भी गद्दी समुदाय के

Year-5 Volume: II, April-June, 2023 Issue-18 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

लिए विशेष महत्त्व का है. यह बैसाख महीने में आयोजित होता है. अधिकतर गद्दी समुदाय का निवासस्थान चंबा के गधेर्ण में है. अपने शीत प्रवास के पश्चात् गधेर्ण लौटते हुए इस मेले को हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। चम्बा जिले के सर्वाधिक प्रसिद्द मेलों में से एक मिंजर मेला श्रावण माह के द्वितीय रविवार से प्राम्भ होता। चंबा के ऐतिहासिक चौगान में इस मेले का शुभारम्भ मिंजर- वितरण से होता है. मिंजर मेले के विषय में विभिन्न लोकोक्तियाँ प्रचलित हैं। इन सब मेलों के अतिरिक्त ला-दरछा मेला (किब्बर), पौड़ी मेला(लाहौल), छित्रारी मेला, डूंगरी मेला (कुल्लू), किन्नौर घटी का फुल्याच मेला, त्रिलोकपुर मेला, सिपी मेला व अन्य कई महत्वपूर्ण मेले हैं। ये सभी मेले स्थानीय लोगों के लिए उतने ही महत्व के हैं जितने कि अन्य क्षेत्रों के मेले। उपरोक्त सभी मेलों में कुल्लू जिले का दशहरा मेला सर्वाधिक प्रसिद्द है. कुल्लू का दशहरा मेला न सिर्फ़ हिमाचल के मुख्य मेलों में से एक है अपितु इसे देखने देश-विदेश से यात्री आते हैं. इस मेले के विषय में विस्तार से चर्चा आगे की जायेगी।

कुल्लू का दशहरा मेला- इतिहास व परम्पराएं

कुल्लू जिला अपनी भौगोलिक सुन्दरता के साथ विशिष्ट जनजातीय संस्कृति के लिहाज से भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। लोककथाओं के अनुसार कुल्लू विश्व में मानव हेतु सबसे अंतिम निवासनीय स्थान रहा है। विष्णुपुराण, रामायण व अन्य हिन्दू पौराणिक शास्त्रों में कुल्लू 'कुलता' नाम से उल्लिखित है। कुल्लू, कश्मीर व काँगड़ा के बाद सबसे प्राचीन राज्य रहा है। चीनी यात्री ह्वेन सांग (629–645ईसा पश्चात्) ने अपनी यात्रा में किउ-लू-तो (कुल्लू) नामक ऐसे देश का उल्लेख किया है जो जालंधर के उत्तर-पश्चिम से 117 मील की दूरी पर अवस्थित है। यह सन्दर्भ तत्कालीन राज्य कुलता की स्थिति का वर्णन करती है.(भारतीय जनगणना 2011), कुल्लू जिले के आधुनिक इतिहास का अनुमान का वर्णन दो महत्वपूर्ण लेखों में किया गया है। प्रथम कैप्टन एपीएफ़ हारकोर्ट द्वारा सन 1871 में लिखित 'द हिमालयन हिस्ट्री ऑफ कुल्लू, लाहौल एंड स्पीति' तथा दूसरा डॉक्टर हीरानंद शास्त्री द्वारा 'वंशावली-द जेनिओलोजिकल रोल ऑफ किंग्स' में मिलता है।

कुल्लू जिले में मुख्यतः **चार मेले/त्यौहार** मनाये जाते हैं. जिनमें **कुल्लू दशहरा, पीपल जात्रा/बसंतोत्सव, भुंतर मेला और शमशी विर्सू हैं. बसंतोत्सव** का पारंपरिक नाम पीपल जात्रा या राइ-री-जच है। यह जिले के ढालपुर नामक स्थान पर हर साल सोलहवें बैसाख को आयोजित किया जाता है.। इसे हर वर्ष 28 से 30 अप्रैल के मध्य आयोजित किया जाता है। यह मेला न सिर्फ़ सांस्कृतिक अपितु व्यावसायिक रूप से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। शीत ऋतु की समाप्ति पर लाहौल निवासी लौटते हुए यहाँ से कृषि व दैनंदिनी सम्बंधित वस्तुएं खरीदते हैं। इसी प्रकार **शमशी विर्सू मेला** प्रथम बैशाख (13 अप्रैल) को खोखन ग्राम में आयोजित किया जाता है। यह मेला पूर्णतयः धार्मिक व ऋतु- सम्बन्धी है। लोग पूज्य देवी की आराधना में बाजरे की ढेरियाँ व मालाएं अर्पित करते हैं। तत्पश्चात पशु-बलि दी जाती है। आषाढ़ महीने की प्रथम तिथि को कुल्लू के भुंतर गाँव में तीन दिवसीय **भुंतर मेला**

Year-5 Volume: II, April-June, 2023 Issue-18 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

लगता है। यह धार्मिक मेला,स्थानीय लोगों के लिए नई फसल से उत्पादित अनाज का भोजन के रूप में प्रयोग का सूचक होता है। लोग नये अनाज से निर्मित पकवान पहले स्थानीय देवताओं को अर्पित कर स्वयं खाते हैं। इसे स्थानीय भाषा में 'ताहूलीखाना' कहा जाता है। कुल्लू जिले में संत जमलू को समर्पित समस्त मंदिरों विशेषतः जमुला मंदिर में **फागली मेले** का आयोजन किया जाता है। इस मेले का आयोजन मनीषी मनु व शांडिल्य की दैत्य तुंडी पर विजयोत्सव के रूप में किया जाता है। इस मेले के दौरान पारंपरिक नृत्य 'गुर खेल' व 'राक्षस खेल' का स्थानीय कलाकारों द्वारा प्रदर्शन किया जाता है। राक्षस की भूमिका निभाने वाले कलाकार ने पूरे शरीर को घास से बने कपड़ों से ढँक रखा होता है और चेहरे पर मुखौटा धारण किया होता है। इसी प्रकार कुल्लू जिले के ही निरमंड गाँव में **बूढ़ी दीवाली मेले** का आयोजन किया जाता हैं। इसे माघ महीने के नये पखवाड़े वाले दिन मनाया जाता है। इस मेले के आयोजन के पीछे कई किवदंतियां प्रचलन में हैं। कहते हैं कि इस तिथि को महाभारत का युद्ध प्रारंभ हुआ था। इस मेले से सम्बंधित सबसे प्रसिद्ध स्थानीय किवदंती के अनुसार राजा राम की लंका पर विजय प्राप्त कर वापिस लौटने का समाचार अन्य स्थानों से चालीस दिनों उपरांत प्राप्त हुआ था। जिसे निरमंड निवासियों ने उसे बूढ़ी दिवाली के रूप में मनाया। **सैंज मेला** बैसाख महीने के इक्कीसवें दिन लगता है। त्यौहार के दौरान मौज-मस्ती व आनंद के वातावरण के कारण इस मेले का धार्मिक व मनोरंजनात्मक महत्व है। तुरही तथा मृदंग की धुन पर पारंपरिक नृत्य के साथ मेले का प्रारंभ होता है।इस दिन भगवान् लक्ष्मीनारायण की मूर्ति को रैला से सैंज लाया जाता है। **भदोली मेला** हर तीन वर्ष के अंतराल पर चार दिनों के लिए लगता है। ये दिन स्थानीय ब्राह्मण प्राधिकारियों द्वारा निश्चित किये जाते हैं। इस मेले का आयोजन ऋषि परशुराम को श्रधांजलि स्वरुप आयोजित किया जाता है। मेले के अंतिम दिन पारंपरिक भोज के आयोजन के साथ इसका समापन हो जाता है। **घटासनी मेले** का आयोजन चैत्र माह में दावड़ा गाँव में किया जाता है। दो दिनों तक चलने वाले इस मेले की किवदंतियां भगवान राम व ग्राम-देवी से सम्बंधित हैं। इस मेले के दौरान स्थानीय निवासी भगवान राम व ग्राम-देवी की पूजा कर सुख-समृद्धि की कामना करते हैं।

कुल्लू जिले का दशहरा मेला सिर्फ़ त्यौहार ही नहीं है बल्कि कुल्लू जिले की संस्कृति का भी परिचायक है। भारतवर्ष के विभिन्न हिस्सों में मनाये जाने वाले दशहरा मेला से कुल्लू जिले का दशहरा मेला सर्वथा भिन्न स्वरुप रखता है। देवताओं की घाटी कहे जाने वाले कुल्लू जिले के दशहरा मेला को सन 1972 में अंतर्राष्ट्रीय मेले का दर्ज़ा प्राप्त हुआ, जब 4 से 5 लाख की संख्या में लोग यहाँ के एतिहासिक ढालपुर मैदान में इस मेले के साक्षी बने। उच्च हिमालयी क्षेत्रों में बहुत प्राचीन समय से उप देवताओं अथवा देवियों की अवधारणा प्रचलित रही है । इस अवधारणा के अनुसार प्रत्येक क्षेत्र अथवा गाँव का एक उपदेवता होता है जो उस स्थान की भूमि का सांकेतिक मुखिया होता है। स्थानीय लोग इस सांकेतिक मुखिया के अंतर्गत उसके आदेशों से कार्य करते हैं. कुल्लू जिला भी इसी परंपरा के वाहकों में से एक है। कुल्लू दशहरे का इतिहास सत्रहवीं शताब्दी पीछे का है जब यहाँ के स्थानीय देवता रघुनाथ जी को को उत्तर प्रदेश के अयोध्या से लाया गया और जो कालांतर में कुल्लू घाटी के मुख्य देवता के रूप में स्थापित हुए। कुल्लू दशहरा को मनाये जाने के पीछे की सर्वाधिक प्रचलित जनश्रुति के अनुसार-'कुल्लू जिले के टीपरी गाँव के

Year-5 Volume: II, April-June, 2023 Issue-18 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

पुजारी दुर्गादत्त के पास बहुमूल्य मोती होने की अफ़वाह प्रसारित हुई। जिसे सुनने के पश्चात् वहां के तत्कालीन शासक रजा जगत सिंह ने उस मोती को प्राप्त करने हेतु अपने सैनिकों को दुर्गादत्त के पास भेजा. दुर्गादत्त ने किसी भी प्रकार का मोती न होने की स्थिति में राजा के भय व अपयश के डर से स्वयं व अपने परिवार को घर में बंद कर आग लगा ली जिससे सभी लोगों की जलने से मृत्यु हो गयी. 'ओ राजा, लो मोती ले लो' कहते हुए दुर्गादत्त व उसके परिवार ने अपने प्राण त्याग दिए. तत्पश्चात राजा को अपनी भूल का एहसास हुआ।न ब्राह्मण व उसके परिवार की मृत्यु के अपराध बोध से राजा को मतिभ्रम की स्थिति रहने लगी. ऐसी जनश्रुति है कि उसे खाने में कीड़े व पानी के गिलास में रक्त दिखने लगा. जब न तो ध्यान-कर्म और न ही किसी वैद्य की औषधि से स्वास्थ्य लाभ हुआ तब अंत में पहाड़ी बाबा के नाम से प्रसिद्द कृष्ण दत्त ने राजा का मार्गदर्शन करते हुए सलाह दी कि राजा का अपराध बोध व मतिभ्रम की स्थिति सिर्फ़ भगवान् राम के आशीर्वाद से ही समाप्त हो सकती है. यद्यपि रजा के पास दूसरा अन्य उपाय न होने की स्थिति में असने पाने विश्वसनीय दरबारी को भगवान राम का चरणामृत लाने अयोध्या भेजा. अंत में यह कार्य कृष्ण दत्त के अनुयायी दामोदर दास को सौंपा गया. विशेष योग्यता वाले दामोदर दास अयोध्या के त्रेतनाथ मंदिर से जुलाई सन 1651 में राजा के लिए भगवान् राम की मूर्ति लाने में सफ़ल हुए. तत्पश्चात इस मूर्ति को कुल्लू के सुल्तानपुर के रुपी महल में स्थापित किया गया. मूर्ति स्थापना से सम्बंधित संस्कारों के लिए अयोध्या से विशेष पुजारियों को भी लाया गया था. उन्हीं के वंशज आज भी भगवान् रघुनाथ की पूजा से सम्बंधित अनुष्ठान करवाते हैं।(सिंह 2016)

तत्पश्चात राजा जगत सिंह के स्वास्थ्य में सुधार प्रारंभ हो गया. वह भगवान् राम से इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने अपना राजसिंहासन स्वेच्छा से त्याग दिया और भगवान् रघुनाथ जी के सेवादार हो गये।(शर्मा 2001) राजा जगत सिंह के इस क़दम का प्रभाव उनके सम्पूर्ण राज्य पर पड़ा तथा भगवान् रघुनाथ जी सम्पूर्ण जिले के देवता बन गये। राजा ने स्थानीय देवताओं के सभी सेवादाओं को आदेश भिजवाया कि विजयादशमी को रघुनाथ जी को कुल्लू के सर्वोच्च देवता के रूप में सम्मान प्रकट करने हेतु उपस्थित हों तथा उसके बाद दशहरा मेले में प्रभाग करें। जनश्रुतियों के अनुसार इस प्रकार कुल्लू जिले में अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त दशहरे मेले का आरंभ हुआ। इस मेले में कुल्लू जिले के अनुमानतः ढाई सौ से तीन सौ के बीच विभिन्न गांवों व क्षेत्रों के देवी देवता प्रतिभाग करते हैं। इस मेले को देखने के लिए प्रतिवर्ष 3 से 4 लाख लोगों की भीड़ देश –विदेश से एकत्र होती है। गत वर्ष दशहरा मेला में विभिन्न क्षेत्रों से 266 देवी/ देवताओं ने प्रतिभाग कर रघुनाथ जी के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की थी। संपूर्ण कुल्लू क्षेत्र में देवी/देवताओं की एक व्यवस्थित प्रणाली है। प्रत्येक परिवार के देवता/देवी, कुलदेवता/देवी, तत्पश्चात गाँव के देवता/देवी होते हैं। उन सब गांवों का मुखिया उस क्षेत्र का देवता/देवी होता है। कुल्लू क्षेत्र के सबसे लोकप्रिय व मुख्य देवता ठाकुर जी(रघुनाथ) हैं. इसके अतिरिक्त अन्य भी कई प्रमुख देवता/देवी हैं। हिरमा देवी जिन्हें हिडिम्बा देवी के नाम से भी जाना जाता है, के आश्रय में कुल्लू राजपरिवार ने राज्य की स्थापना व उसका विस्तार किया। इसी प्रकार विश्व के सबसे प्राचीन लोकतंत्र के स्थापक माने जाने वाले मलाणा गाँव के देवता ऋषि जमदग्नि जमलू दशहरा मेला में प्रतिभाग नहीं करते हैं। देवताओं/देवियों के मध्य इस अद्भुत शत्रुता/देव नियमों की परंपरा के पालन के तौर पर कमांद के देवता ऋषि

Year-5 Volume: II, April-June, 2023 Issue-18 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

पराशर, भुवनेश्वरी देवी, पुइद माता, जगरनाथी, थान देवता, जोगणी माता, फलाणी नारायण , वीर्नाथ बड़ाग्रा, आदि कुल्लू दशहरा में प्रतिभाग नहीं करते हैं। शत्रु देवता जमलू ऋषि के जंगल से रघुनाथ जी के रथ हेतु लकड़ी लायी जाती है। जिस पर सवार होकर वह ढालपुर मैदान तक की यात्रा तय करते हैं। मनाली की देवी हिडिम्बा का रथ ढालपुर मैदान पहुँचने के पश्चात् की रघुनाथ व अन्य देवताओं की शोभायात्रा निकलती है। जबकि मेले में भाग न लेने के बावजूद जगरनाथी व भेख्ली देवी निचले पुइद गाँव तक उनके स्वागत हेतु आती हैं। कुल्लू दशहरा में मैदानों से एकमात्र देवता नारायण(विष्णु के स्वरुप) पंजाब से शिरकत करते हैं। कुल्लू क्षेत्र में कई आदिवासी नाग देवता भी हैं जो स्वयं को क्षेत्र की नदियों व झरनों की आत्मा मानते हैं। इनकी उत्पत्ति सर्वोच्च नाग देवता बसु नाग से मानी जाती है जिनका मंदिर कोठी नग्गर के कमरहाटी में स्थित है। इस क्षेत्र में देवताओं का विभाजन व उसके अनुसार कर देने की परंपरा आज भी है। कुल्लू का दशहरा देश के अन्य दशहरा मेलों से कई मामलों में भिन्न स्थान रखता है। देव परंपरा के अतरिक्त यह एकमात्र ऐसा दशहरा है जहाँ विजयदशमी के दिन रावण दहन की परंपरा का निर्वहन नहीं किया जाता है। रघुनाथ जी के पवित्र विशालकाय रथ को रस्सियों से खींचा जाता है। श्रद्धालु इस रथ को खींचकर भगवान् रघुनाथ का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। इस रथयात्रा का नेतृत्व नाग देवता करते हैं। ऐसा माना जाता है कि वे भीड़ को अलग कर रथ हेतु मार्ग दिखाते हैं। इसी प्रकार मेले में सब देवी/देवताओं के कार्य निर्धारित होते हैं जिन्हें स्थानीय प्रसाशन व कारदारों की सहायता से पूर्ण किया जाता है। देवताओं के इस सात दिवसीय अद्भुत मिलन समारोह में सबकी अलग अलग पालकियां, झंडे व वाद्ययंत्र होते हैं जो इन्हें अन्य से अलग पहचान दिलाते हैं।

दशहरा मेले का सांस्कृतिक व ऐतिहासिक परिदृश्य

दशहरा जिसे विजयदशमी के नाम से भी जाना जाता है। पूरे भारत वर्ष में आश्विन माह के दसवें दिन मनाया जाता है। इसे बुराई पर अच्छाई की जीत के त्यौहार के रूप में लोकप्रियता प्राप्त है। ऐसी मान्यता है कि इस दिन भगवान् विष्णु के दसवें अवतार श्री राम ने रावण का वध कर लंका वासियों को उसके अत्याचारों से मुक्ति दिलाई थी। इस दिन की याद में लोग रावण की बुराईयों के प्रतीक दस सर वाले रावण के पुतले का दहन करते हैं। रावण के साथ मेघनाथ व कुम्भकर्ण के पुतले भी जलाए जाते हैं। इस सम्बन्ध में एक अन्य जनश्रुति के अनुसार इस दिन देवी दुर्गा ने राक्षस महिसासुर का वध कर न्याय की रक्षा की थी। आश्विन माह में नवरात्र के दसवें दिन इसे मनाये जाने का यह एक अन्य कारण है। नव दिन स्त्री-शक्ति की उपासना के पश्चात् विशेषतः उड़ीसा व पश्चिम बंगाल राज्यों में दसवें दिन दुर्गा प्रतिमा का विसर्जन कर दिया जाता है। देश के अलग अलग हिस्सों में विभिन्न परम्पराओं के साथ दशहरे का उत्सव मनाया जाता हैं। जिनमें से कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं।

Year-5 Volume: II, April-June, 2023 Issue-18 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

मैसूर का दशहरा- मैसूर का दशहरा देश भर में अपनी भव्यता हेतु प्रसिद्द है। यहाँ धार्मिक विधि-विधान पूर्वक मनाया जाने वाला दशहरा मैसूर की शाही परंपरा को सम्पूर्ण कर देता है। दस दिन तक चलने वाले दशहरा उत्सव के दौरान सम्पूर्ण शहर देवी चामुंडेश्वरी को श्रद्धा अर्पित करता है। पर्व का सबसे बड़ा आकर्षण मैसूर महल की सजावट होती है जिसे अनुमानतः एक लाख प्रकाश बल्बों से सजाया जाता है, इन्हें शाम 7 बजे से 10 तक जलाया जाता है। महल के मुख्या द्वार पर विभिन्न सांस्कृतिक नृत्य व संगीत का प्रस्तुतीकरण किया जाता है। उत्सव का समापन देवी चामुंडेश्वरी की जुलूस यात्रा जिसमें देवी की भव्य प्रतिमा को हाथी पर बैठाया जाता है, के साथ होता है।

पश्चिम बंगाल में दशहरा-

देश के अन्य हिस्सों की तरह पश्चिम बंगाल में दशहरा केवल रावण दहन तक ही सीमित नहीं है। इस क्षेत्र में दशहरा को स्त्री-शक्ति के विजयोत्सव के रूप में मनाया जाता है, जब दुर्गा ने महिसासुर का वध किया था। पाँच दिनों तक चलने वाले इस अतिभव्य उत्सव का प्रारंभ नवरात्रि के छठे दिन से प्रारंभ हो जाता है जो विजयदशमी वाले दिन तक चलता है। पश्चिम बंगाल के मुख्यतम त्योहारों में से होने के कारण इसकी तैयारियां महीने भर पहले से ही प्रारंभ हो जाती हैं। भव्य पंडाल, देवी की आकर्षक प्रतिमाएं, विभिन्न प्रतियोगिताएं इस त्यौहार का विशेष आकर्षण रहती हैं। पंडालों में स्वादिष्ट 'भोग' परोसा जाता है। अंतिम दिन विवाहित महिलाएं सिंदूरदान के अनुष्ठान सम्पूर्ण करती हैं तथा देवी दुर्गा को पान, मिष्ठान व प्रसाद का भोग लगाकर विदा करती हैं। महिलाएं आपस में एक दूसरे को सिन्दूर लगाती हैं जिसे सिन्दूरखेला कहा जाता है। शाम में लोग एकत्रित होकर शुभ भोज करते हैं।

गुजरात का दशहरा-

गुजरात में दशहरे का पर्व अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन श्रद्धालु पूरे दिन उपवास के साथ देवी की उपासना करते हैं। शाम को सभी पुरुष,बच्चे व स्त्रियाँ रंगीन परिधानों में एकत्र होते हैं तथा गरबा और डांडिया खेलते हैं जो गुजरात का लोकनृत्य भी है। लोकधुनें, संगीत व नृत्य का सम्मिश्रण गुजरात में इस त्यौहार को सर्वथा भिन्न पहचान प्रदान करता है।

उत्तर-भारत की दर्शनीय रामलीला-

नवरात्रि उत्तर भारत के सबसे प्रमुख त्योहारों में से एक है। शरद नवरात्रि के साथ ही जनमानस में त्यौहारों का उत्साह शुरू हो जाता है। इस समयावधि में श्रद्धालु देवी को प्रसन्न करने हेतु विधिपूर्वक उपवास रखते हैं तथा पूजा करते हैं। आठवें अथवा नवें दिन कन्या पूजा का अनुष्ठान होता है जिसमें छोटी बच्चियों को देवी के नौ रूपों के प्रतीक मानकर उन्हें भोजन कराया जाता है तथा उपहार प्रदान किये जाते हैं। दसवें दिन रावण, मेघनाथ व कुम्भकर्ण का पुतला दहन किया जाता है। उत्तर भारत के अधिकांशतः क्षेत्रों में राम लीला का मंचन किया जाता है जिसमें राम की जीवन कथा के

Year-5 Volume: II, April-June, 2023 Issue-18 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

साथ उनके वनवास गमन, सीता हरण, लंका दहन तथा अयोध्या वापसी का प्रभावशाली मंचन किया जाता है। राम लीला के मंचन की समाप्ति रावण दहन के साथ सम्पूर्ण हो जाती है। उत्तर-भारत में विजयदशमी के दिन दशहरा मेला मुख्य आकर्षण होते हैं। ये मेले लोगों की ख़ुशी व उल्लास का प्रतीक होते हैं।

तमिलनाडु का दशहरा-

तमिलनाडु राज्य में दशहरा दुर्गा, लक्ष्मी व सरस्वती की आराधना के रूप में मनाया जाता है। यहाँ नवरात्रि के दौरान तीनों देवियों की प्रतीक गुड़िया हाथों से बनायीं जाती हैं। यह काम मुख्यतः घर के बच्चे करते हैं। इन्हें घर के मुख्य द्वार पर पांचवी, सातवीं अथवा ग्यारहवीं सीढ़ी पर स्थापित किया जाता है। अंतिम दिन इनकी पूजा की जाती है तथा लोककथाएं सुनाई जाती हैं। तमिलनाडु में दशहरा देवी अराधना के पश्चात शुभ कार्यों के प्रारंभ का दिन माना जाता है। इस दिन सरस्वती की अराधना कर विशेषतः शिक्षा, संगीत सम्बन्धी कार्य शुरू किये जाते हैं।

यद्यपि हिमाचल प्रदेश में कुल्लू का दशहरा सर्वाधिक प्रसिद्द है फिर भी रामपुर बुशहर के चौगान में लगने वाला मेला, पांवटा साहिब का दशहरा मेला, प्रदेश की राजधानी शिमला के रिज मैदान का दशहरा मेला भी लोगों के आकर्षण का केंद्र रहते हैं। इसके अतिरिक्त हिमाचल के बैजनाथ में रावण दहन न होकर उसकी पूजा की जाती है। ऐसी मान्यता है कि बैजनाथ का ऐतिहासिक शिव मंदिर की स्थापना में रावण का योगदान था। जिसके कारण शिव यहाँ विराजमान हैं। विजयदशमी के दिन शिव मंदिर को सजाया जाता है और शिव की विशेष पूजा-अर्चना की जाती है।

कुल्लू दशहरा मेला के विविध आयाम

- **सामाजिक सरोकार-** कुल्लू के ढालपुर मैदान में आयोजित इस मेले में राज्य सरकार व स्थानीय प्रसाशन की ओर से सामाजिक जागरूकता से सम्बंधित स्टॉल्स लगाये जाते हैं। सरकार की योजनायें, उनके लाभ से सम्बंधित जानकारियां इन स्टॉल्स पर उपलब्ध होती हैं। जिनसे दूर-दराज से आये सुदूर पहाड़ी क्षेत्र के लोग लाभान्वित होते हैं। गत वर्ष कुल्लू दशहरा से हुई आय का 7 प्रतिशत भाग को प्रसाशन ने बेसहारा पशुओं की देखभाल पर खर्च करने का निर्णय लिया था। इसी प्रकार ऐतिहासिक ढालपुर मैदान का सौन्दर्यीकरण व रखरखाव, शहर में सोलर लाईटों आदि का प्रबंध भी इसी राशि से किया जाता है। स्वछता अभियान, बेटी बचाओ बेटी पढाओ योजना, कृषि सम्बंधित सरकारी योजनाओं के स्टॉल स्थानीय प्रसाशन की ओर से लगाए गये। कुल्लू के कला केंद्र में गत वर्ष पारंपरिक नृत्य व संगीतके साथ केंद्र सरकार की बेटी बचाओ बेटी पढाओ योजना पर आधारित नाटक का मंचन किया गया। साल 2014 से कुल्लू दशहरा के समापन-दिवस पर दी जाने वाली 7 पशुओं की बलि पर रोक लगा दी गयी। इसके साथ कुल्लूवासियों व स्थानीय प्रसाशन ने समाज को पुरानी रुढियों से बाहर निकलने का सन्देश दे दिया है। कुल्लू का दशहरा जिस तरह से परंपरा के साथ चलते हुए आधुनिकता के साथ सामंजस्य बैठाये हुए है, इसे अन्य से भिन्न स्थापित करता है।

Year-5 Volume: II, April-June, 2023 Issue-18 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

- **संस्कृति का प्रतिबिम्ब-** कुल्लू मेला हिमाचली संस्कृति के लिए भी प्रसिद्द है। स्थानीय लोग पारंपरिक परिधानों में नज़र आते हैं। स्थानीय हस्त कला व शिल्प के स्टॉल्स भी लगाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त स्थानीय संगीत व नृत्य की विशेष प्रस्तुतियां होती हैं। सिर्फ़ कुल्लू ही नहीं हिमाचल के अन्य जिलों से पारंपरिक नृत्य व संगीत के लिए कलाकारों को आमंत्रित किया है। गत वर्ष के दशहरा मेला में तेरह हज़ार प्रतिभागियों ने एक साथ पारंपरिक नृत्य नाटी प्रस्तुत कर गिनीज़ बुक ऑफ़ वर्ल्ड में अपना नाम स्थापित किया है। नाटी मुख्यतः हिमाचल प्रदेश के उच्च क्षेत्रों का पारंपरिक नृत्य है। मेले में ऐसे कई अवसर आते हैं जिन्हें विज्ञान व आधुनिकता की कसौटी पर तुलना निश्चित ही कठिन होता है। ऐसी माना जाता है कि देवताओं की पालकी उठाए लोग दैवीय शक्ति से चलते व हिलते डुलते हैं। इसे स्थानीय लोग देव नृत्य कहते हैं। इसके अतरिक्त बासु नाग की पालकी, सबसे प्रारंभ में चलती है तथा भीड़ में से रघुनाथ जी के लिए रास्ता साफ़ करती है। रघुनाथ जी की रथ यात्रा के समय अलग अलग क्षेत्रों से आये देवताओं की अगुवाई वहन के पारंपरिक वाद्य यंत्रों की धुन के साथ होती है। देवताओं के मिलन की अनूठी परंपरा, सांकेतिक कार्य विभाजन व उनसे जुड़े किस्से इस मेले को देशभर के अन्य दशहरा मेलों से भिन्न बनाते हैं।

- **मनोरंजन एवं उत्सव स्थल** – कुल्लू का दशहरा न सिर्फ़ स्थानीय लोगों के लिए बल्कि हिमाचल के अन्य क्षेत्रों के लोगों के लिए मनोरंजन का माध्यम है। ढालपुर के एतिहासिक मैदान में इस मेले की तैयारी न सिर्फ़ प्रसाशन की ओर से बल्कि स्थानीय लोगों की ओर से भी महीने भर पहले ही प्रारंभ हो जाती हैं। सालों से यह मेला न सिर्फ़ अलग अलग क्षेत्रों के देवी/देवताओं के साथ वहां के लोगों के लिए भी लोकसंचार के माध्यम की भूमिका का निर्वहन करता रहा है। एक ही स्थान पर लगभग हर क्षेत्र की परम्पराओं व संस्कृतियों के समागम का यह एकमात्र स्थल है जिसे अनुभूत करने हेतु हिमाचल के साथ साथ देश-विदेश से भी सैलानी आते हैं। न सिर्फ़ पारंपरिक लोकनृत्य व संगीत बल्कि विभिन्न खेलों व प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया जाता है। जिसके कारण यह मेला युवा पीढ़ी की सहभागिता को भी बनाये रखे हुए है। विभिन्न खेल व प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग हेतु हिमाचल प्रदेश व पडोसी राज्यों हरियाणा, पंजाब व जम्मू से युवा आते हैं। जब देश के अन्य हिस्सों में मेलों की पहचान पर संकट बना हुआ है। ऐसे में कुल्लू का दशहरा मेला में भावी पीढ़ी को हिमाचली संस्कृति से जोड़े रखने हेतु नित नये प्रयोग हो रहे हैं।

- **परंपरागत खान-पान व परिधान-** मक्की की रोटियां व साग, कुल्लू का पारंपरिक पकवान सिड्डू व पास के जिलों से आये लोग भी अपने अपने स्थानीय व्यंजनों की बिक्री करते हैं। पारंपरिक भोजन भी इस मेले का एक बड़ा बाज़ार व बाहर से आये लोगों की विशेष पसंद है। यथा चंबा का राजमा व चुख, विभिन्न जिलों में उत्सवं के अवसर पर बनने वाली धाम, तिब्बती पकवान मेले में बहुतायत मिलते हैं। पारंपरिक भोजन मांग

Year-5 Volume: II, April-June, 2023 Issue-18 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

गत वर्ष के मेले में भी ख़ूब रही। कुल्लू व हिमाचल के उपरी क्षेत्रों में मक्के व मोटे अनाजों के उत्पादन में कमी आई है। जबकि पारंपरिक भोजन के रूप में है स्थानीय लोगों के साथ साथ सैलानियों में भी ख़ूब प्रसिद्ध है। विगत वर्ष के मेले में में लगे दो स्टाल्स ने करीब साढ़े सात क्विंटल मक्की की रोटियां बेचीं। इसके अलावा सिड्डू की दुकानों पर भी ख़ासी भीड़ रही। पारंपरिक परिधानों व आभूषणों में लोकनृत्य व संगीत का साक्षी बनने का सबसे प्रमुख अवसर कुल्लू का मेला है। मेले में स्थानीय लोग हिमाचल की पारम्परिक हिमाचली टोपी में नज़र आते हैं। कुल्लवी पट्टी के परिधान व टोपी की सैलानियों में विशेष मांग रहती है।

- **लोकसंचार का केंद्र-** मेले व पारंपरिक उत्सव लोगों के मेलजोल का स्थान रहे हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में जीवन यापन की विषम परिस्थितियाँ ऐसे उत्सवों का महत्व बढ़ा देती हैं। कुल्लू का दशहरा मेला उच्च हिमाचल के दूर दराज के लोगों के लिए लोक संचार का माध्यम भी है। लाहौल- स्पीती, किन्नौर, मंडी जिले के सुदूर क्षेत्र, किन्नौर व कुल्लू के सुदूर गाँवों के लोगों के लिए यह मेला आवश्यकता की वस्तुओं के बाज़ार के साथ अपने अलग रह रहे सगे सम्बन्धियों से मिलने का अवसर भी उपलब्ध कराता है। कई सारी राज्य व स्थानीय सरकारी योजनाओं की घोषणा इस मेले में की जानी निश्चित की जाती हैं। जिससे की अधिक से अधिक लोगों तक इनकी जानकारी पहुँच सके और अधिकतम लोगों लाभान्वित हो सकें। किसी एक अवसर पर इतनी अधिक संख्या में लोगों की अनुशासित उपस्थिति लोक संचार के लिए सबसे अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण करती है।

- **आर्थिक व रजनीतिक व्यवस्था के परिचायक** – 7 से 8 लाख लोगों की हफ्ते भर से अधिक उपस्थिति का कुल्लू जिले की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान है। अकेले ढालपुर मैदान में मेले की समयावधि के लिए भूमि के आवंटन मेला प्रसाशन 5 करोड़ से अधिक आय अर्जित करता है। मिलन समारोह में आये देवताओं को अकेले राज्य सरकार की तरफ़ से लाखों रुपये की राशि नज़राने के तौर पर आवंटित की जाती है। स्थानीय लोग भी अपने आराध्य को चढ़ावा चढाते हैं। मेले को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त होने के कारण यहाँ के बाज़ार की प्रतीक्षा व्यापारी और मेले में शिरक़त करने वाले लोग वर्ष भर करते हैं। सर्दियों के कपडे, स्थानीय परिधान. चमड़े के सामान, मसाले आदि का यह बड़ा बाज़ार है। पारंपरिक आभूषण व कुल्लवी परिधानों के लिए विशेषतः लोग इस मेले में शिरक़त करते हैं। आर्थिक दृष्टि के साथ साथ कुल्लू के राजनीति परिदृश्य के सम्बन्ध में भी यह मेला अत्यंत महत्वपूर्ण है। कुल्लू राजपरिवार के वंशज राजा महेंद्रगिरी सिंह जो वर्तमान में रघुनाथ जी के छड़ीबरदार भी हैं। वे एक राजनेता व संसद भी रहे हैं। कुल्लू दशहरा मेला की परम्पराओं के पालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की वजह से राजा महेंद्र गिरी का बड़ा स्थानीय वोटबैंक भी है। इनके बड़े भाई राजा कर्ण सिंह कांग्रेस सरकार में केन्द्रीय मंत्री भी रहे थे। कुल्लू मेला के ढालपुर ऐतिहासिक मैदान से विभिन्न परियोजनाओं की घोषणाओं के पीछे राजनीतिक लाभ भी निहित

Year-5 Volume: II, April-June, 2023 Issue-18 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

होते हैं। इसकी महत्ता का अनुमान इस बात से पता चलता है कि हर वर्ष दशहरा मेला में प्रदेश के मुख्य मंत्री व बड़े-छोटे राजनेता अपनी उपस्थिति लोगों के मध्य दर्ज करते हैं।

वर्तमान समय में कुल्लू दशहरा मेला का स्वरूप

- **परंपरा व आधुनिकता का सामंजस्य-** ढालपुर मैदान में जहाँ एक ओर पारंपरिक नृत्य व संगीत की प्रस्तुतियाँ होती हैं वहीं दूसरी ओर आधुनिक खेलों का आयोजन भी होता है। सांध्य कार्यक्रमों में मुंबई,पंजाब व अन्य स्थानों से आये प्रसिद्द कलाकारों की प्रस्तुतियां होती हैं। लोक व्यंजनों के साथ पित्ज़ा, बर्गर व अन्य चायनीज़ पकवानॉन की भी मेले में ख़ूब बिक्री होती है। पंजाब के लुधियाना, तिब्बती बाज़ार व अन्य राज्यों से आये व्यापारी आधुनिक परिधानों की बिक्री करते हैं। हिमाचल के शहरी व ग्रामीण युवाओं हेतु लिए यह मेला बाज़ार के नये चलन को सीखने, अपनी प्रतिभा को निखारने के अवसर प्रदान करता है तथा हिमाचली संस्कृति को पुरानी से नई पीढ़ी तक पहुँचाने के माध्यम के रूम में कार्य कर रहा है।

- **उत्सव शैली में बदलाव-** समय के साथ साथ मेले की उत्सव शैली में कुछ बदलाव भी आये हैं। यथा- अब विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन होने लगा है। देश के प्रसिद्द नये गायक व नर्तकों की प्रस्तुतियां भी सान्ध कार्यक्रमों में रखी जाने लगी हैं। जबकि इससे पहले हिमाचली लोकगायकों व संगीतज्ञों के कार्यक्रम मुख्य आकर्षण हुआ करते थे। अब यह उत्सव धार्मिक उत्सव व संस्कृति के प्रदर्शन के साथ मनोरंजन का साधन अधिक बन गया है।

- **प्रचार-प्रसार के नए तौर तरीके-** मेले स्वयं प्रचार-प्रसार के महत्वपूर्ण स्थान रहे हैं। जन-जागरूकता के कार्यक्रमों व सरकारी योजनाओं का प्रचार राज्य सरकार की ओर से किया जाता है। कुल्लू के दशहरा मेला को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाने में नई तकनीक का भी महत्वपूर्ण योगदान है। मेले में घूमने आये देश विदेश के सैलानी यहाँ से सम्बंधित जानकारियाँ व तस्वीरें इंटरनेट पर साझा करते हैं। राज्य सरकार व कुल्लू प्रसाशन भी मेले के दौरान व उपरान्त अपनी आधिकारिक वेबसाईट पर मेले सेव्सम्बंधित समस्त महत्वपूर्ण जानकारियां साझा करता रहता है। जिससे यहाँ घुमने आये सैलानियों व लोगों को मेले से सम्बंधित हर जानकारी प्राप्त होती रहती है।

- **देशी-विदेशी पर्यटकों का आकर्षण केंद्र**- विगत कुछ वर्षों में कुल्लू मेला में शिरक़त करने वाले विदेशी सैलानियों की संख्या में वृद्धि हुई है। स्थानीय लोगों के अतरिक्त देश के अन्य राज्यों से भी सैलानी इस मेले को देखने पहुँचने लगे हैं। नई तकनीक, सोशल मीडिया पर इससे सम्बंधित खबरे व जानकारियाँ सैलानियों में मेले के प्रति रूचि पैदा कर रही है। गत वर्ष मेले में लगभग 5 से 6 लाख लोगों ने शिरक़त की।

Year-5 Volume: II, April-June, 2023 Issue-18 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

निष्कर्ष

पुरातन स्वरूप से चला यह उत्सव क्रमबद्ध तरह से विभिन्न दौर से गुजरा है। जब देश दुनिया में मेले आधुनिकता व तकनीक के दौर में अपने अस्तित्व को बचाए रखने की जद्दोजहद में लगे हुए हैं तो ऐसे में कुल्लू के दशहरा मेला ने किस तरह से परंपरा व आधुनिकता के मध्य सामंजस्य बिठाया है यह बेहद रोचक विषय है। देवताओं के सम्मुख होने वाली सांस्कृतिक प्रस्तुतियां अब बाक़ायदा सांस्कृतिक संध्याओं में तब्दील हो चुकी हैं। विभिन्न श्रेणियों के अंतर्गत साथ सांस्कृतिक संधाएं आयोजित होने लगी हैं जिनमें पंजाब व हिमाचल सहित विदेशी कलाकार भी कला केंद्र के थियेटर में अपनी प्रस्तुतियां देते हैं। परंपरा को बनाये रखने तथा रुढियों से मुक्त हो जाने का सबसे बेहतरीन उदहारण यह दशहरा मेला है। सदियों से चली आ रही मेले में पशुबलि की प्रथा पर सन उच्च न्यायालय द्वारा सन 2014 से रोक लगा दी गयी। पशुबलि के स्थान पर अब नारियल फोड़े जाने की परम्परा है। हिमाचल की विशेषतः कुल्लू जिले की नई पीढ़ी तक संस्कृति व समृद्ध परंपरा के बीज अंकुरित करने में यह मेला जाने अनजाने महत्वपूर्ण भूमिका में है। पूरे हिमाचल में कुल्लू जिले के निवासियों में अपनी संस्कृति को लेकर लगाव अन्य जिलों से कहीं अधिक देखने को भी मिलता है। तकनीक के युग में भी युवा इस मेले से जुड़ाव महसूस करते हैं, कारण यहाँ उनकी रुचियों से सम्बंधित उपलब्ध मनोरंजन व ज्ञान के साधन भी हैं.यहाँ आयोजित आधुनिक खेलों के लिए विभिन्न जिलों की टीमें प्रतिभाग करती हैं। बेहतर प्रदर्शन करने वाले खिलाडियों को राज्य की टीम में अवसर दिया जाता है। इसके अतिरिक्त गायन, संगीत व नृत्य कार्यक्रम भी आयोजित होते हैं। यह मेला यहाँ के युवाओं को अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन के लिए मंच उपलब्ध करता है। वर्ष के दशहरा के मेला 2015में 9000 हज़ार पंजीकृत कलाकारों ने लोकनृत्य नाटी एकसाथ प्रस्तुत कर गिनीज़ बुक में अपना स्थान सुरक्षित किया। ऐसे कई सारे अवसर व तथ्य हैं जो इस मेले के ग्लोकल होने को सुनिश्चित करते हैं. गूगल पर कुल्लू दशहरा टाईप करने पर करीब एक लाख नब्बे हज़ार पेजेस व वीडियो खुलकर आते हैं. मेले से सम्बंधित अनेकों जानकारियां सोशल मीडिया यूज़र भी उपलब्ध कराते हैं। प्रत्येक दिन तकनीक का विस्तार हो रहा है और लोगों तक इसकी पहुँच बढ़ रही है, इसके उपयोगकर्ता विशेषतः युवा मेले की लगभग हर छोटी बड़ी जानकारी दुनिया भर में उपलब्ध कराने में सफ़ल हो रहे हैं। रघुनाथ जी की यात्रा और विश्व के पहले लोकतंत्र होने का दावा करने वाले दूरस्थ गाँव मलाणा के देवता जामलू के विषय में जानकारी से लेकर अन्य तमाम सूचनाएं इंटरनेट के माध्यम से अब उपलब्ध है। जैसे जैसे तकनीक बदलती जायेगी यह दशहरा मेला अपने ग्लोकल स्वरुप को और अधिक विस्तारित करता जाएगा।

सन्दर्भ-सूची

- Berti, D. (2011). Political Patronage and Ritual Competitions at Dussehra Festival in Northern India.

- Axelby, R. (2015). Hermit Village or Zomian Republic? An update on the political socio-economy of a remote Himalayan community. European Bulletin of Himalayan Research, 46: 35-61. *European Bulletin of Himalayan Research*, *46*, 35-61.
- Singh, V. (2014). Dussehra Festival: Situating the Cult of Rama in the Kullu Valley. *International Journal of Humanities and Social Science Invention* .
- Berti, D. (2009). Kings, Gods, and Political Leaders in Kullu (Himachal Pradesh).
- Singh, R. B., & Kumar, P. (2014). Geographic and Socio-Economic Realities of Himachal Pradesh, Northwestern Himalaya. In *Livelihood Security in Northwestern Himalaya*(pp. 11-26). Springer, Tokyo.
- Vasan, S., & Kumar, S. (2006). Situating conserving communities in their place: Political economy of Kullu Devban. *Conservation and Society*, 325-346.
- Sharma, Parikshit & Sharma, Priya & Kaith, Meenakshi. (2012). Traditional Food, Fairs and Festivals Of Himachal Pradesh.
- Ngai, E. W., Tao, S. S., & Moon, K. K. (2015). Social media research: Theories, constructs, and conceptual frameworks. *International Journal of Information Management*, *35*(1), 33-44.
- Directorate of Census Operations, H. P. (2011). *District Census Handbook.* Kullu.
- Tanwar, M., Tanwar, B., Tanwar, R. S., Kumar, V., & Goyal, A. (2018). Himachali dham: Food, culture, and heritage. *Journal of Ethnic Foods*, *5*(2), 99-104.

वेबसाईट्स

- Corespondent, S. (2005). *The Hindu*. Retrieved from www.thehindu.com: https://www.thehindu.com/2005/11/14/stories/2005111413700300.htm
- Goel, T. (2015, March). *Loop-Whole*. Retrieved from www.tarungoel.in: http://www.tarungoel.in/2015/03/08/mandi-shivratri-festival-history/
- *Government of Himachal Pradesh*. (n.d.). Retrieved from www.hpkullu.nic.in: https://hpkullu.nic.in/culture-heritage/
- *Himachal Tourist Guide*. (n.d.). Retrieved from www.himachaltouristguide.com: http://www.himachaltouristguide.com/index.php/chamba/chamba-town/places-of-interest/475-chhatrari
- *Himachal Tourist Guide*. (n.d.). Retrieved from www.himachaltouristguide.com: http://www.himachaltouristguide.com/index.php/fairs-and-festivals-of-himachal

- IANS. (2016, May). *The Hindu*. Retrieved from www.thehindu.com: https://www.thehindu.com/news/national/other-states/holi-folk-festival-begins-in-himachal-pradesh/article5781912.ece
- IANS. (2017, October). *The Hindu*. Retrieved from www.thehindu.com: https://www.thehindu.com/todays-paper/tp-miscellaneous/tp-others/kullu-dussehra-where-policing-is-virtually-left-to-a-deity/article19780179.ece
- *India Mapped, Fairs in India*. (n.d.). Retrieved from www.indiamapped.com: http://www.indiamapped.com/fairs-in-india/the-nalwari-fair/
- *Indian Mirror*. (n.d.). Retrieved from www.indianmirror.com: http://www.indianmirror.com/culture/states-culture/himachal-pradesh.html
- Khan, S. H. (n.d.). *Sahapedia*. Retrieved from www.sahapedia.org: https://www.sahapedia.org/kullu-dussehra-of-himachal-pradesh-0
- *Kullu Online*. (n.d.). Retrieved from www.kulluonline.in: http://www.kulluonline.in/city-guide/fairs-and-festivals-in-kullu
- Sanagala, N. (2018). *Hindupad*. Retrieved from www.hindupad.com: https://hindupad.com/shoolini-mela/
- Sengupta, S. (2017, September). *6 Different Dussehra Celebrations Across the country you must know*. Retrieved from www.Ndtv.com: https://www.ndtv.com/food/6-different-dussehra-celebrations-across-the-country-you-must-know-about-1752898
- Thakur, R. (2013, July). *Himachal Spider*. Retrieved from www.himachalspider.com: http://www.himachalspider.com/resources/4800-International-festivals-Himachal-Pradesh.aspx
- *Toursim Himachal*. (n.d.). Retrieved from www.tourismhimachal.in: http://www.tourismhimachal.in/himachal_fair_festival.html

***

The Asian Thinker